# प्रकाश पर्व दीपोत्सव

*डॉ. शालिनी सक्सेना

**सारांशः–**

भारतीय परम्परा में त्यौहार एवं व्रत पर्वों का अपना महत्त्व है। ये भारत की समृद्ध सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परम्परा के द्योतक हैं। भारतीय ऋषियों ने हर दिन को एक पर्व के रूप में स्वीकार किया है। फिर भी तिथि विशेष काल विशेष ऋतुविशेष के वैज्ञानिक महत्त्व को ध्यान में रखकर ही उनको विशेष आदर एवं सम्मान प्रदान किया गया है। भारत वर्ष के महत्त्वपूर्ण पर्वों में दीपावली का पर्व विशेष महत्त्व रखता है। इस पर्व के धार्मिक एवं आध्यात्मिक स्वरूपक ा प्रतिपादन ही इस आलेख का विषय है।

'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की शाश्वत कामना का साकार पर्व दीपावली उन विशेष पर्वोत्सवों में सर्वश्रष्ठ है, जो भारतवासियों में ऊर्जा एवं प्राण शाक्ति के संचारक कहे जाते है। अन्धकार पर प्रकाश की विजय का यह महापर्व मानव को अज्ञान, दारिद्रय एवं दुष्कर्मों से लड़ने की सतत प्रेरणा देता है। ऐसी जन श्रुति है कि ब्रह्या ने ब्राह्मणों को रक्षा बन्धन, क्षत्रियों को दशहरा (विजया दशमी), वैश्यों को दीपावली एवं शुद्रों को होलिका के उत्सव दिये हैं परन्तु दीपात्सव सभी जाति, वर्ण एवं समुदाय के लोग हर्षोल्लास से मनाते है। इसे 'सुख रात्रि', 'यम रात्रि' एवं 'सुख सुप्तिका' भी कहा गया है। लक्ष्मी पूजा की यह रात्रि ही सुख रात्रि है। इस दिन भगवती कमला की उपासना मुख्य है। कमला श्रीस्वरूपा है। तेज ही संसार का सार एवं श्रीस्वरूप है। तेज रहित मनुष्य हतश्री कहा जाता है। ईश्वर ने हमें सूर्य, चन्द्र एवं अग्नि त्रिविध तेज प्रदान किया है। इनकी सहायता से मनुष्य के समस्त कार्यों का निर्वाह होता है। सूर्य इस सब में प्रमुख (तेज) है, इसीलिए उसे भास्कर कहा गया है, किन्तु गति क्रम के अनुसार समीप और दूर होने से इस तेज की प्राप्ति में न्यूनाधिक्य हो जाता है।

वर्ष में बारह अमावस्या आती है मगर प्रत्येक पर दीपोत्सव नहीं मनाया जाता। कार्तिक मास में ही दीपदान का विशेष महत्व कहा गया है। जो व्यक्ति तिल के तेल से पूरित दीपदान करता है, वह श्री, रूप एवं सम्पदा प्राप्त करता है–

**'तुलायां तिलतैलेन सांयकाले समागते।**
**आकाशदीपं यो दद्यान्मासमेकं हरिं प्रति।।**
**महतीं श्रियमाप्नोंति रूपसौभाग्यसंपदम्।'**

ज्योतिषशास्त्र में मेषराशिस्थ सूर्य उच्च भाव का और तुला राशि स्थित सूर्य नीच भाव का हो जाता है। उत्तरगोल में विषुव वृत पर मेष राशि एवं दक्षिण गोल में तुला राशि स्थित है। कार्तिक मास में सूर्य तुला राशिस्थ होने के कारण विषुव वृत्त पर नीच का होता है। उस समय सूर्य के तेज का अत्यल्प और विकृत प्रभाव पड़ता है। अमावस्या पर चन्द्र तेज का सर्वथा अभाव होता ही है। अतः तृतीय तेज अग्नि की अपेक्षा रहती है। लक्ष्णी पूजा में अग्नि के प्राधान्य एवं कार्तिक में दीपदान का यही कारण है।

साथ ही वर्षा ऋतु में जल की बहुलता एवं सूर्य तेज की अल्पता के कारण पृथ्वी पर विविध कीटाणु उत्पन्न हो जाते हैं, इसीलिए कार्तिक मास मे घर की स्वच्छता, अलंकरण आदि पर बल दिया जाता है। घर में दीपावली प्रज्वलित कर अन्यान्य प्रकार से अग्नि के तेज में दरिद्रा रोग स्वरूपा लक्ष्मी को नष्ट कर सुख समृद्धि रूपा अमृत लक्ष्मी का वरण किया जाता है। घर में आया नचीन धान्य उसे समर्पित करते है।

धर्मशास्त्रानुसार सम्पूर्ण कार्तिक मास ही पुण्यप्रदाता माना गया है। कार्तिक मास का नामकरण कृतिका नक्षत्र पर आधरित है। वेद में जैसे प्रथम शब्द अग्नि है वैस ही प्रथम नक्षत्र कृतिका है। कृतिका अग्नि का नक्षत्र एवं नक्षत्रों का मुख है। कृतिका के एक ओर तेजस्वी, दीप्ति का साधन शुक्र एवं दूसरी ओर ज्योति है। अतः इसमें अग्न्याधानकर्ता मनुष्य तेजस्वी, ब्रह्मवर्चसी एवं देदीप्यमान होता है। इसीलिए इस मास में दीपदान को विशेष महत्व दिया जाता है।

इस कार्तिक मास में विशेष रूप से पाँच दिवस पर्यन्तं 'दीपोत्सव' अथवा 'कौमुदी महोत्सव' मनाया जाता है। पाँच दिनों में पृथक–पृथक कृत्यों का विधान किया गया है। इन पाँच दिनों में धनवन्तरि पूजा, नरकासुर पर विष्णु विजय का उत्सव, लक्ष्मी पूजा, बलि पर विष्णु विजय का उत्सव, द्यूत दिवस एवं भाई–बहिन के स्नेह का उत्सव यम द्वितीया प्रमुख है।

कार्तिक कृष्ण त्रयौदशी को धन–पूजा एवं धन्वन्तरी पूजन, चतुर्दशी को तैलाभ्यंगपूर्वक स्नान एवं यम के निमित्त तर्पण, रात्रि में नरक के लिए दीपदान किया जाता है। ऐसी मान्यता है कि चतुर्दशी को लक्ष्मी तेल में निवास करने आती है, अतः इस दिन तेल से स्नान करना चाहिए। अमावस्या को तेलाभ्यंग एवं स्नान करके लक्ष्मी पूजा एवं घर, बाहर, मन्दिर, देहरी आदि में दीपमालिका प्रज्वलित करनी चाहिए। कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को बलिपूजा एवं गोवर्धन पूजा विशेष है। कार्तिक शूक्ल द्वितीया को यम द्वितीया का उत्सव मनाया जाना चाहिए। इन सभी दिनों में दीपदान का विशेष पुण्य कहा गया है। विशेष रूप से कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को बलि राज्य के निमित्त दीपदान से लक्ष्मी स्थिर होती है।

वर्ष क्रिया कौमुदी, धर्मसिन्धु आदि ग्रन्थों के अनुसार कार्तिक (आश्विन अमान्त) कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी और अमावस्या की सन्ध्याओं को मनुष्य अपने हाथों में उल्काएं लेकर अपने पितरों को मार्ग दिखाये क्योंकि आश्विन मास में जो पितर यमलोक से महालय श्राद्ध पर आये है, उन्हें इन उल्काओं से मार्गदर्शन प्राप्त हो और वे ऊपर चले जाये। आश्विन मास में पृथ्वी पर आये पितृ प्राणों को ऊर्ध्व लोकों तक ले जाने के लिए कार्तिक में तेज स्वरूप अग्नि का अवलम्बन लिया जाता है। दीप प्रज्वलन रूप आग्नेय प्राण अथवा देव प्राण के आह्वान पर सौम्य प्राण अथवा पितृप्राण उर्ध्व गमन करते है। सोम तत्व प्रबल होकर अग्नि तत्व को

जिन ऋतुओं में दबा देता है, वे शरद प्रभृति तीन ऋतुएं विशेषतः पितृ सम्बन्धी मानी जाती है। इसी कारण शरद ऋतु के आरम्भ में हमारे यहाँ पितृपक्ष माना जाता है। जब अग्नि तत्व प्रबल हो जाता है, तो सोम तत्व उसमें समाहित होकर देवस्वरूप हो जाता है, अतः कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी देवप्रबोधिनी है। वस्तुतः यह देवप्राण के जागरण एवं स्पन्दन का उत्सव है।

इस प्रकार ज्योतिपर्व दीपावली अपने धार्मिक एवं वैज्ञानिक महत्व के साथ मानव मात्र को सद्कर्मो की ओर ले जाने का पर्व भी है। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' के साथ 'असतो को सद्गमय' के समन्वय का शाश्वत पर्व है दीपावली। जो युगों युगों से मानव मन को आल्हादित करता आया है।

***प्रोफेसर**
**राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय**
**जयपुर (राज.)**